श्री दीपावली पूजन विधि

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार
प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव
ससंघ

प्रकाशक
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पुस्तक का नाम	:	श्री दीपावली पूजन विधि
आशीर्वाद	:	गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव
रचनाकार	:	प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव व संघ
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	रचनाकाराधीन
अर्थ सौजन्य	:	श्री जिनसेन महिला मंडल नांदणी
प्रतियाँ	:	1000
संस्करण	:	द्वितीय-2019
प्रकाशक	:	श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन C/o धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट, पोस्ट-कचनेर, गट नं. 11-12, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) www.jainacharyaguptinandiji.org E-mail : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान	:	प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव संघ श्री धर्मतीर्थ पोस्ट-कचनेर, गट नं. 11-12, औरंगाबाद (महा.)
मुद्रक	:	राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर मो.नं. : 9829050791 E-mail : shahsundeep@rocketmail.com

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	दीपावली कब से व कैसे ? – आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	4
2.	दीपावली पूजन विधि	6
3.	विनय पाठ – गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी	9
4.	पूजा प्रारम्भ – गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी	10
5.	श्री नित्यमह पूजा – गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी	14
6.	श्री महावीर पूजा – आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी	18
7.	श्री गौतम गणधर पूजा – गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी	23
8.	श्री केवलज्ञान लक्ष्मी पूजा – आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी	27
9.	श्री सरस्वती पूजन – आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी	30
10.	अर्घावली	36
11.	समुच्चय अर्घ	38
12.	शांतिपाठ	39
13.	विसर्जन	40
14.	दीपावली व व्यापार वृद्धि के विशेष मंत्र, यंत्र व तंत्र	41

दीपावली कब से व कैसे ?

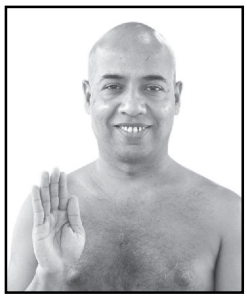

भगवान् महावीर सब ओर से भव्यों को सम्बोध कर पावानगरी पहुँचे और वहाँ ''मनोहर उद्यान'' नाम के वन में विराजमान हो गये। जब चतुर्थकाल में तीन वर्ष साढ़े आठ माह बाकी थे तब स्वाति नक्षत्र में कार्तिक अमावस्या के दिन प्रात:काल (उषाकाल) के समय अघातिया कर्मों का नाश कर भगवान कर्म बन्धन से मुक्त होकर मोक्षधाम को प्राप्त हो गये। इन्द्रादि देवों ने आकर उनके शरीर की पूजा की। उस समय देवों ने बहुत भारी दैदीप्यमान दीपकों की पंक्ति पावानगरी को सब तरफ से प्रकाश युक्त कर दिया। उस समय से लेकर आज तक प्रतिवर्ष दीपमालिका द्वारा भगवान महावीर की पूजा करने लगे। *(देखें 'हरिवंश पुराण', सर्ग 66, पृष्ठ 805)*

उसी दिन सायंकाल में श्री गौतमस्वामी को केवलज्ञान प्रकट हो गया। तब देवों ने आकर गंधकुटी की रचना करके गौतमस्वामी की एवं केवलज्ञान की पूजा की।

इसी उपलक्ष्य में लोग सायंकाल में दीपकों को जलाकर पुन: नयी बही आदि का मुहूर्त करते हुए गणेश और लक्ष्मी की पूजा करने लगे हैं। वास्तव में **''गणानां ईश: गणेश: = गणधर:''** इस व्युत्पत्ति के अनुसार बारह गणों के अधिपति गौतम गणधर ही गणेश हैं ये विघ्नों के नाशक हैं और उनके केवलज्ञान विभूति की पूजा ही महालक्ष्मी की पूजा है।

सायंकाल में दीपकों को प्रज्वलित करते समय निम्नलिखित मंत्र बोलना चाहिये–

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मोहान्धकारविनाशनाय-ज्ञानज्योतिः प्रद्योतनाय दीपपंक्ति प्रज्वालयामीति स्वाहा।

दीपक जलाने का प्रयोजन :-

दीपक का प्रकाश आत्मा का बोधक है, ज्ञान का द्योतक है। दीपक का तेल या घी राग मोह का प्रतीक है। तेल रूपी राग जब जलता है तब ज्ञान ज्योति प्रकट होती है। दीप का प्रकाश जैसे स्वयं प्रकाशित है, दूसरे को भी प्रकाशित करता है, वैसे ही हमारा ज्ञानमय रूप प्रकट हो जाये।

दीपावली पर्व शाश्वत पर्व, यह नैमित्तिक, आध्यात्मिक व सामाजिक पर्व है। सभी धर्म व संस्कृति में देश-विदेश में इस पर्व का महत्त्व है। परन्तु आज इस पर्व का मूल तत्त्व खो गया है। आज सिर्फ नये वस्त्र पहनना, प्रदूषण फैलाना, मिठाईयाँ खाना और आतिशबाजी में करोड़ों रुपए बर्बाद करके प्रदूषण फैलाना ही दीवाली हो गया है जो कि सर्वथा अनुचित है। व्यर्थ की आतिशबाजी से दीवाली नहीं अपितु अपने घर-परिवार, देश व प्रकृति का दीवाला निकल रहा है। अस्तु दीवाली क्या है ? इसे सम्यक् रूप में कैसे मनायें ? इसकी सम्पूर्ण विधि को संक्षिप्त रूप में सरल ढंग से समझाने का प्रयास किया गया है। इसमें पूजन विधि पूर्वाचार्यों द्वारा दी गयी है व पूजायें नये युग के अनुसार मैंने व संघ ने लिखी है। यंत्र-मंत्र व तंत्र भी पूर्वाचार्यों का संकलन है। मेरा इसमें कुछ नहीं जो कुछ है सो उनका है। हमारे गुरु भक्तों की भावनानुसार यह द्वितीय संस्करण आपके हाथों में पहुँचा है। आप इसका यथावत उपयोग करें व जैन शास्त्रानुसार दीपावली पूजन से नये वर्ष का मुहूर्त्त करके देखें। इस विधि के साथ आप न्याय नीति के मार्ग पर चलते हुए भी सफलता का प्रयास कर सकते हैं। जन-जन में भगवान महावीर की वाणी, न्याय नीति, धर्म का साम्राज्य स्थापित हो इसी शुभ भावना के साथ...

-आचार्य गुप्तिनंदी

दीपावली पूजन विधि

पूजन सामग्री :- अष्ट द्रव्य थाली, दीपक, मंगल कलश, पीली सरसों, लाल कपड़ा, लच्छा (कलावा) श्रीफल, धूप, जिनवाणी, चौकी-पाटा-2, कुंकुम, केसर कटोरी, नागरबेल पान-10, पुष्प, पुष्प मालाएँ, नई बहियाँ, कमल, कलम, दवात, मीठा, दुर्वा, हल्दी इत्यादि। नोट :- अपनी आवश्यकतानुसार पूजन सामग्री एकत्रित करें।

पूजन विधि :- सायंकाल को उत्तम मुहूर्त्त में या गोधूलि बेला में अपने निवास स्थान या दुकान के पवित्र स्थान में पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके पूजा प्रारम्भ करें। एक पाटे पर चावलों से स्वस्तिक बनाकर उस पर एक जिनवाणी, दाहिनी ओर घी का दीपक, बाईं ओर धूप दान एवं मध्य में कलश रखें। एक पाटे पर अष्ट द्रव्य की थाली, दूसरे पाटे पर खाली थाली में स्वस्तिक बनाकर द्रव्य चढ़ाने को रख लेना चाहिए, पूजा ग्रहस्थाचार्य या कुटुम्ब के मुखिया द्वारा की जानी चाहिए।

पूजन प्रारम्भ :

मगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्द-कुन्दाद्यौ, जैन धर्मोऽस्तु मंगलं॥

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए परिवार के सदस्यों (पूजन में बैठे हुए लोगों) को तिलक करें।

मंत्र : ॐ नमोऽर्हते रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र के द्वारा पुरुषों के दाएँ हाथ में तथा महिलाओं के बाएँ हाथ में कंकण बंधन करें तथा सभी लोग अपने ऊपर थोड़ा-थोड़ा जल छिड़के। जल छिड़कते समय इस मंत्र को बोलें-

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी, अमृतं स्रावय-स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय इ्वीं इ्वीं सं हं हं सः स्वाहा।

इसके उपरान्त इस मंगलाचरण को पढ़ते हुए पुष्प क्षेपण करें–

अर्हन्तो भगवन्त इंद्र महिता, सिद्धाश्च सिद्धीश्वरा,
आचार्या जिन शासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायका।
श्री सिद्धांत सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलं॥

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीमज्जिनशासने भगवतो महति महावीर वर्द्धमान तीर्थंकरस्य धर्मतीर्थे श्री मूल संघे मध्य लोके भरत क्षेत्रे आर्य खंडे भारत देशे.... प्रदेशे श्री मंगल कलश स्थापनं करोमि क्ष्वीं हं संः स्वाहा।

दीपक स्थापना मंत्र

रुचिर दीप्ति करं शुभ दीपकं सकल लोक सुखाकरमुज्ज्वलं।
तिमिर जाल हरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिर हरं दीपकं प्रज्वालयामि स्वाहा।

अब लक्ष्मी पूजन करने के पूर्व अष्ट द्रव्य तैयार कर चौकियों पर रख लें। एक चौकी पर मंगल कलश की स्थापना करें। गद्दी पर बहीखाता, दवात–कलम, नवीन वस्त्र, रुपयों की थैली आदि रखें।

सर्वप्रथम मंगलाष्टक पढ़कर रखी हुई सभी वस्तुओं पर पुष्प अर्पण करें। इसके बाद स्वस्ति विधान, देव–शास्त्र–गुरु का अर्घ, पंचपरमेष्ठी पूजन, नवदेवता पूजन, महावीर स्वामी पूजन, गणधर पूजन, केवलज्ञान लक्ष्मी की पूजन करें। इसके उपरान्त बहियों पर साथिया बनाएँ तथा **'श्री ऋषभाय नमः'**, **'श्री महावीराय नमः'**, **'श्री गौतम गणधराय नमः'**, **'श्री केवलज्ञान सरस्वत्यै नमः'** और **'श्री लक्ष्म्यै नमः' लिखकर 'श्री वर्द्धताम्'** लिखें। इसके बाद इस प्रकार से श्री का पर्वत बनाएँ–

❊ श्री ❊
❊श्री श्री ❊
❊ श्री श्री श्री ❊
❊ श्री श्री श्री श्री ❊
❊ श्री श्री श्री श्री श्री ❊

इसके पश्चात् 'श्री देवाधिदेव श्री महावीर निर्वाणत्... तमे वीराद्वे श्री... तमे विक्रमाद्वे..... ईस्यवीय संवत्सरे शुभ लग्ने, स्थिर मुहूर्त्ते श्री जिनार्चन विधाय अद्य कार्तिक.... कृष्णामावस्यायां शुभवासरे, लाभ वेलायां नूतन वसनामुहूर्तं करिष्ये।'

सब बहियों पर यह लिखकर पान, लड्डू, सुपारी, पीली सरसों, दुर्वा और हल्दी रखें। पश्चात् श्री वर्धमानाय नमः, श्री महालक्ष्म्यै नमः, ऋद्धिः सिद्धर्भवतुतराम् केवलज्ञान लक्ष्मी देव्यै नमः, मम सर्वसिद्धिर्भवतु, काम मांगल्योत्सवाःसन्तु, पुण्यं वर्द्धताम्, धनं वर्द्धताम् पढ़कर बहीखातों पर अर्घ चढ़ाएँ। अनंतर मंगल कलश वाली चौकी पर रुपयों की थैली को रखकर उसमें

''श्री लीलायतनं महीकुलग्रहं कीर्तिप्रमोदास्पदं,
वाग्देवी रति केतनं जय रमाक्रीड़ा निधानं महत्।
सः स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थ-प्रदं,
प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनांघ्रिद्वयं॥''

श्लोक पढ़कर साथिया बनाएँ। पश्चात् लक्ष्मी पूजन करें और लक्ष्मी स्तोत्र, पुण्याह वाचन, शांति विसर्जन करें।

इस यंत्र को लक्ष्मी पूजन के दिन अपने बहीखाते पर लिखें। हल्दी-केशर या चंदन से तथा निम्न मंत्र की एक माला अवश्य जपें-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

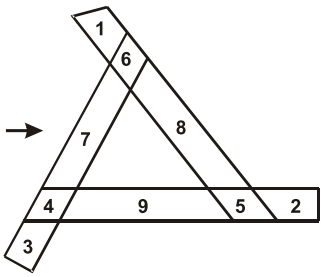

9	16	2	7
6	3	13	12
15	10	8	1
4	5	11	14

इस यंत्र को दीपावली के दिन केशर या सिन्दूर से दुकान पर दाएँ हाथ पर बही पर लिखें।

इसको दीपावली के दिन दुकान के अंदर दीवार पर सामने लिखें, मंगल स्थापना के दाहिने और (दोनों यंत्रों की अष्ट द्रव्यों से पूजा करें।)

10	17	2	7
6	3	14	13
16	11	8	1
4	5	12	15

विनय पाठ

(दोहा)

कर्मजाल में हूँ फँसा पाया है बहु त्रास।
जग स्वारथ से है भरा किस पर हो विश्वास॥1॥
भक्ति-श्रद्धा-विनय सहित आया जिनवर पास।
धन्य हुआ है भाग्य मम मिट गई मन की प्यास॥2॥
प्रभुवर ने तो कर दिए कर्म ये आठों नाश।
केवलज्ञान उदित हुआ जग को दिया प्रकाश॥3॥
नमन करूँ जिनदेव को करके निर्मल भाव।
खेवटिया जिन नाथ मम पार लगा दो नाव॥4॥
भव्यजनों को तारते भवसागर से आप।
शरण आपकी पा प्रभु नश जाते सब पाप॥5॥
गुण अनंत हैं आपके कर न सकें विस्तार।
अजर-अमर जिननाथ तुम हो त्रिभुवन आधार॥6॥
अरिहंत-सिद्धाचार्य का ले मंगल शुभ नाम।
उपाध्याय साधू-चरण सफल करें सब काम॥7॥
जिनवाणी माता मुझे देना सम्यक् ज्ञान।
कृपा करो जिस पर वही बन जाता भगवान्॥8॥

पूजा आरंभ (हिन्दी)

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरूणां वंदे चारण–चरणं सदा वंदे।।

3

2 **24**

5

ॐ जय–जय–जय – नमोस्तु–नमोस्तु–नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पांजलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलीपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवली पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते शरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलीपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पांजलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र माहात्म्य

(नरेन्द्र छन्द)

पवित्र हो या अपवित्र प्राणी चाहे भी हो कैसा।
बुरी अवस्था हो या अच्छी या ना हो उसपे पैसा।।
णमोकार का ध्यान करे जो वह पावन बन जाता है।
परमातम का सुमरण ही जीवन को शुद्ध बनाता है।।

महाभयानक विघ्नों से यह महामंत्र छुड़वाता है।
जग जीवों को शांतिकारक मुक्ति जो दिलवाता है।।1।।
सब पापों का क्षयकारक जो सबमें पहला मंगल है।
विश्वशांति का महाविधायक हरे अनिष्ट अमंगल है।।
अर्हं का उच्चारण करके परम ब्रह्म को नमता हूँ।
सिद्धचक्र के बीजाक्षर को नमस्कार नित करता हूँ।।2।।
कर्म अष्ट से मुक्त हुए जो मुक्ति निकेतन के वासी।
सम्यक्त्वादि गुणों से भूषित नमस्कार हो अविनाशी।।
जिनवर की पूजन करने से प्रलय-विघ्न नश जाते हैं।
भूत शाकिनी सर्प शांत हो विष-निर्विष हो जाते हैं।।3।।

(पुष्पांजलि क्षिपामि)

उदकचंदनतंडुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

उदकचंदनतंडुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंतसिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

उदकचंदनतंडुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहंयजे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

स्वस्ति वाचन

(नरेन्द्र छन्द)

अनंत चतुष्टय के तुम धारक स्याद्वाद के हो दायक।
अंतर भौतिक लक्ष्मी शोभित वंदनीय त्रिभुवन नायक।।
मूलसंघ के भव्य प्रवर को पुण्य दिलाते हो बिन हेत।
करें जिनेश्वर की विधि पूजा धन्य भाग्य मम भक्ति समेत।।1।।

तीन लोक में श्रेष्ठ व सुंदर प्रभु की महिमा उदित हुई।
स्वतः प्रकाशमयी दृग्ज्योति भव्यों के हित मुदित हुई॥
निर्मल ज्ञानामृत है प्रगटा मंगल स्व-पर प्रकाशक हार।
तीन लोक में फैल गया वह त्रिजग वस्तु का जाननहार॥2॥

द्रव्यशुद्धि औ भावशुद्धि दोनों विधि का आलम्बन ले।
करूँ यथार्थ पुरुष की पूजा भाव सहित मैं द्रव्य लिए॥
सर्व वस्तु का ज्ञान कराते अर्हत पुरुषोत्तम पावन।
उनकी केवलज्ञान अग्नि में करें विसर्जित पुण्यार्जन॥3॥

(ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चौबीस तीर्थंकर स्तुति

(यहाँ प्रत्येक भगवान के नाम के साथ पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

(नरेन्द्र छन्द)

मंगल वृषभदेव जिनवर हैं, अजितदेव भी हैं मंगल।
मंगल संभव श्री जिनस्वामी, अभिनंदन करते मंगल॥
मंगल कर्ता सुमतिप्रभु हैं, पद्मप्रभु मंगलदायक।
श्री सुपार्श्व करते हैं मंगल, चंद्रप्रभु हैं सुखकारक॥1॥

पुष्पदंत अमंगल हर्ता, शीतल शीतलता दाता।
श्री श्रेयांस सुमंगल भूषण, वासुपूज्य सब सुख दाता॥
विमल कष्ट हर मंगल करते, अनंतजिन सब सुख कर्ता।
धर्मप्रभु मंगल स्वरूप बन, शांतिप्रभु शांति कर्ता॥2॥

कुंथुनाथ मंगलधर स्वामी, अरहनाथ अरि के हर्ता।
श्री मल्लि मंगल जिन स्वामी, मुनिसुव्रत मुनि के भर्ता॥
नमिजिनेश मंगल की मूरत, नेमिनाथ प्रभु हितकारी।
पार्श्वप्रभो उपसर्ग विजेता, वर्द्धमान मंगलकारी॥3॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों।।
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा।।
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्राः ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आव्हानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्राः ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्राः ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृति हरता हूँ।।
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना।। देव शास्त्र..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ।। देव शास्त्र..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ।।
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया।। देव शास्त्र..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा।। देव शास्त्र..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ।। देव शास्त्र..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है।। देव शास्त्र..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है।। देव शास्त्र..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा : काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय-जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर-नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि-सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत-शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री महावीर पूजा

शंभु छंद

श्री वीर जिनेश्वर ! हे जगदीश्वर ! हम तेरा यशगान करें।
हम करें वंदना रोज तेरी, जिनवर तेरा गुणगान करें॥
अंतर्मन में गुणथापन कर, हम तेरी महिमा गाएँगे।
है वाँछा मेरी हे जिनवर !, तुम जैसा शिवपद पाएँगे॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

भक्ति गंगा का नीर, चरणन् ले आया।
हरूँ जन्म-जरा-मृत पीर, मन मेरे भाया॥
यह निर्मल जल ले वीर, तेरा ध्यान धरूँ।
श्री वीरप्रभु अतिवीर, तव यशगान करूँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवदाह मिटाओ नाथ, चंदन अर्पित हो।
शुचि चंदन श्रद्धा साथ, आज समर्पित हो॥
भव ताप विजेता वीर, तेरा ध्यान धरूँ। वीर प्रभु....॥2॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत तंदुल हम लाय, श्रद्धा युक्त प्रभो।
अक्षय सुख हम पा जाय, कर्म विमुक्त विभो॥
अक्षय सुखकारी वीर, तेरा ध्यान धरूँ॥ श्री वीर प्रभु....॥3॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे काम विजेता वीर, कमल चढ़ाता हूँ।
ले भक्ति कुसुम महावीर, चरण चढ़ाता हूँ॥
मैं हरूँ काम की पीर, तेरा ध्यान धरूँ॥ श्री वीर प्रभु....॥4॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।

ले ज्ञान चरू मैं आज, प्रभु तुम गुण गाऊँ।
कर क्षुधा कर्म पर राज, तुम सम गुण पाऊँ॥
हे क्षुधा विजयी महावीर, तेरा ध्यान धरूँ।
श्री वीरप्रभु अतिवीर, तव यशगान करूँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम मोह तिमिर विनशाय, त्रिभुवन नाथ हुए।
तुमको शुभ दीप चढ़ाय, भक्त सनाथ हुए॥
हे मोह विजेता वीर, तेरा ध्यान धरूँ॥ श्री वीर प्रभु....॥6॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मधुर सुगंधित धूप, तुमको अर्पित हो।
घट अगर-तगर के भूप, तुम्हें समर्पित हो॥
हे सिद्ध सन्मति वीर, तेरा ध्यान धरूँ॥ श्री वीर प्रभु....॥7॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम शिवफल दायक नाथ, भव दुःख मेट लिया।
फल लेकर हो नत माथ, तुमको भेंट किया॥
दो मोक्ष सुफल हे वीर !, तेरा ध्यान धरूँ। श्री वीर प्रभु....॥8॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल अनर्घ पद देव, तुम सन्मुख मिलता।
जो करे आपकी सेव, ज्ञान सुमन खिलता॥
मैं अर्घ चढ़ाऊँ वीर, तेरा ध्यान धरूँ॥ श्री वीर प्रभु....॥9॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक (चौपाई)

सिद्धारथ घर खुशियाँ छाई, गर्भ में आए त्रिभुवन राई।
त्रिशला उर महावीरजी आए, देव-देवियाँ हर्ष मनाएँ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री वीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

त्रिशला माँ के भाग्य जगे थे, सिद्धारथ घर वाद्य बजे थे।
चैत सुदी तेरस का दिन था, वीर प्रभु ने जन्म लिया था।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री अतिवीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मगसिर कृष्णा दशमी आई, मुनि दीक्षा प्रभु के मन भाई।
मात-पिता जग वैभव छोड़ा, निज काया से नाता तोड़ा।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री सन्मतिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

सुद वैशाख दशम सुखकारी, जिन सर्वज्ञ बने हितकारी।
प्रभु ने तीर्थंकर पद धारा, सत्य धर्म का किया प्रचारा।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

(तर्ज : ऐ मेरे वतन के लोगों....)

चले वीर प्रभु इस जग से, हुए मोक्ष सुपथ शिवगामी।
कैसे हम रोकें इनको, मिल जाए अमृतवाणी।।
पावापुर आए जिनवर, भक्ति से नत सुर गणधर।
कार्तिक था अमावस का दिन, वसुकर्म नशाए तत्छिन।
परमौदारिक तन तजकर, वे हुए सिद्ध अविनाशी।। कैसे...

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

दोहा : **सहस अठोत्तर कुंभ ले, करूँ शांतिहित धार।**
वीर प्रभु के पाद में, पुष्पांजलि सुखकार।।

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

धत्ता : प्रियकारिणी नंदन, हे जगवंदन ! हे परमातम ! वीर प्रभु।
शिवपुर के वासी, मुक्ति रमापति, अष्टकर्म जयी सिद्ध प्रभु॥

नरेन्द्र छंद (आओ बच्चों तुम्हें दिखाये...)

आओ गाएँ हम शुभ गाथा सन्मति सरल सुजान की।
सिद्धारथ सुत त्रिशलानंदन, महावीर भगवान की॥ वंदे जिनवरम्....

वीर प्रभु ने जन्म लिया जब जग का सारा पाप मिटा।
शांति हुई तीनों लोकों में जग का दुःख संताप हटा॥
सिद्धारथ घर खुशियाँ छाईं भव्यों ने स्तवन किया।
देवों ने आ मेरु शिखर श्री वीर प्रभु का न्हवन किया॥
आज बधाई सुरगण गाएँ मध्य लोक के शान की। सिद्धारथ.....॥1॥

नागदमन करने से जग में नाम पड़ा था 'वीर' प्रभु।
मुनियों की शंका मिटते ही नाम 'सन्मति' हुआ विभु॥
हाथी का जब मान गलाया 'अतिवीर' वे कहलाए।
कर्मयुद्ध को निकल पड़े तब 'महावीर' बन हर्षाए॥
सुरगण आए खुशी मनाने जिनके तप कल्याण की। सिद्धारथ.....॥2॥

प्राणिमात्र की हिंसा का श्री जिनवर ने प्रतिकार किया।
हिंसा रूढ़ी पाखंडों का समता से निस्तार किया॥
नारी मुक्ति का वीरा ने जमकर बिगुल बजाया था।
ले भिक्षा अबला नारी से जैन धरम बतलाया था॥
चंदनबाला पात्र बनी महिमामय पावनदान की। सिद्धारथ.....॥3॥

सात्यिकि रुद्र बड़ा दम्भी उपसर्ग किया जिनवर पर था।
उतने क्षण कर्मों को काटा मित्र बना तन नश्वर था॥

देह मात्र उनकी भव्यों को संयम राह बताती थी।
दर्शन करके सब जीवों की कली-कली खिल जाती थी॥
मौनदशा में सारी किरिया कर दी जग उत्थान की॥ सिद्धारथ.....॥4॥

ऋजुकूला सरिता के तट पर आकर चौथा ध्यान धरा।
शुद्ध ध्यान की अग्नि से अपने कर्मों को स्वयं हरा॥
चार घातिया नाश किए तब प्रभु को केवलज्ञान हुआ।
गौतम गणधर के आते जिनवाणी का यशगान हुआ॥
अनेकांत वाणी फैलाई उनने जन-कल्याण की। सिद्धारथ.....॥5॥

श्रेणिक जैसे मानी का भी उनने जन्म सुधार दिया।
जम्बू, सुदर्शन, सती चेलना का उनने उद्धार किया॥
तीस वर्ष उपदेश दिया फिर पावापुरी प्रस्थान किया।
योग निरोध किया जिनवर ने शिवपुर को अभियान किया॥
पूजा करने आए सुरनर वर्द्धमान भगवान की। सिद्धारथ.....॥6॥

चले स्वयं शिवपथ पर भगवन् वह पथ सबको दिखलाया।
सत्य शांति समता करूणा ये मानव भूषण बतलाया॥
निश्चय औ व्यवहार मार्ग अरु स्याद्वाद नय समझाया।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है अनुभव यह मन को भाया॥
'गुप्ति' भी समता के हेतु शरणा ली गुणखान की।
सिद्धारथ सुत त्रिशलानंदन महावीर भगवान की॥ वंदे जिनवरम्...॥7॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वर्द्धमान अतिवीर तुम, हो सन्मति सुखकार।
महावीर व वीर बन, किया स्वयं उद्धार॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री गौतम गणधर पूजा (दीपावली पूजा)

(नरेन्द्र छन्द)

सुर-नर-किन्नर से वन्दित हैं, गणधर प्रभु के चरण-कमल,
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षामंत्र धवल।
तीर्थंकर के प्रमुख शिष्य, गणधर का करता आह्वानन्,
सर्वकार्य की सिद्धि हेतु, करता गुणगण स्थापन।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठि ऋद्धिसंपन्न श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जग में जय-जयकार हो रही, जिनका गाते सब यशगान।
जग मंगल का बीजभूत है, सम्यग्दर्शन रत्न महान्।।
क्षीरोदधि का जल ले निर्मल, करता प्रभुवर का पूजन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर, उनका मैं करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

परम ज्योति उद्योतित करते, मोहतिमिर हरने वाले।
विशद विनय से सहित शिष्य, गुण गाते प्रभु के मतवाले।।
मलयागिरि चंदन हम लाये, करते चरणों में लेपन। मुनिगण...।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

सुर-नर-खेचर-इन्द्र सभी, सम्यक् आराधन करते हैं।
जिनवर के गुण पाने को वे, पाप विराधन करते हैं।।
ललित मनोहर अक्षत लाया, तीर्थंकर के लघुनंदन। मुनिगण...।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

भवसागर से पार लगाकर, मोक्षमहल ले जाते हैं।
संत भी जिनकी सेवा करके, शिवसमृद्धि पाते हैं।
कमल वकुल कुन्दादि चढ़ाऊँ, भौरों का जिसमें गुंजन।। मुनिगण...।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

मोहपाश की अग्नि ने, भूमण्डल का है नाश किया।
किन्तु आपने इसको वशकर, मोहमल्ल का नाश किया॥
घेवर-बावर-फैनी आदि, नाना विधि के ले व्यंजन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर, उनका मैं करता अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

अखिलविश्व के सब ज्ञेयों को, भगवन् तुमने जान लिया।
दिव्य अतीन्द्रिय आत्मज्योति से, समतारस का पान किया।
दीप थाल से करूँ आरती मोहतिमिर का हो भंजन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

जिनके ध्यान-मनन से मिटती, भव की सारी पीड़ायें।
भूत-प्रेत सब देव शांत हो, करते मनहर क्रीड़ायें॥
अगर-तगर की धूप चढ़ाऊँ, बनूँ प्रभु का लघुनंदन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

गणधर की सेवा अर्चा से, विपुल सौख्य मिल जाता है।
गुण अनंत का स्वामी बनकर, महामोक्ष फल पाता है॥
केला, लौंग, बिजौरा, श्रीफल, करते सबका मनरंजन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु, वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से, कर्म अरि पर वार किया॥
जल-फल आदि आठ द्रव्य से, करता प्रभु का अभिनन्दन। मुनिगण...॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर महामुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

समुच्चय अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

आदिनाथ से महावीर तक, तीर्थंकर सुखकारी।
उनके चौदह सौ बावन हैं, गणधर ज्ञान प्रचारी॥

वृषभसेन से इन्द्रभूति तक, सब गणधर को ध्यायें।
मनहर अर्घ चढ़ाकर हम सब, रत्नत्रय गुण पायें॥

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां श्री वृषभसेनादि एक सहस्र चतुर्शतक द्विपंचाशत गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **गणधर गुरु के पाद में, करूँ सुखद जलधार।**
सुरभित सुमनों को चढ़ा, पाऊँ सौख्य अपार॥

शांतये शांतिधारा...दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **गणधर गण के ईश को, नमन करें त्रय बार।**
जयमाला इनकी पढ़ें, होवें भवदधि पार॥

(गीता छन्द)

जय-जय श्री महावीर की गौतम ऋषि की जय कहे।
पाई शरण महावीर की उनकी शरण में तुम रहें॥
ऋद्धी धरें सिद्धी करें सब विघ्न के नाशक प्रभू।
चउ ज्ञान के धारी गुरु हो प्रथम गणधर तुम विभू॥1॥

तव गौत्र गौतम ख्यात था और इन्द्रभूति नाम था।
चलते स्वयं उन्मार्ग पे जग को चलाना काम था॥
शत पाँच शिष्य समूह को अध्ययन कराते वेद का।
मद मोह से आक्रान्त थे नहीं भाव स्व-संवेद का॥2॥

छ्यासठ दिनों तक दिव्य वाणी न मिली श्री वीर की।
श्रावक पपीहा भाव से आशा करे भव तीर की॥
जाना स्वयं के ज्ञान से चिंतित हृदय सौधर्म ने।
बन विप्र बूढ़े रूप में गौतम को लाया यज्ञ से॥3॥

लख दृश्य मानस्तंभ का गौतम का मिथ्या मद गला।
शिष्यत्व वर महावीर का सीखी सुखद संयम कला॥
आषाढ़ सुदी पूनो के दिन प्रभु वीर के दर्शन किये।
गुरु पूर्णिमा को बन गुरु निज आत्म के दर्शन किये॥4॥

धारा था गणधर रूप को महावीर के नंदन बने।
पाई थी चौसठ ऋद्धियाँ वे जगत का क्रंदन हने॥
गणधर के शुभ सद्भाव में श्री वीर की वाणी खिरी।
श्रावण वदि एकम दिवस स्थान विपुलाचल गिरी॥5॥

प्रत्यूष कार्तिकमावसी महावीर मुक्ति को गये।
उस ही दिवस की साँझ में सर्वज्ञ गौतम हो गये॥
प्रातः समय सब भक्तगण लड्डू चढ़ाये भाव से।
कैवल्य लक्ष्मी गणपति को सांझ पूजे चाव से॥6॥

जिनवाणी लक्ष्मी मात है गणधर प्रभु ही गणपति।
बारह वर्ष उपदेश दे फिर बन गये मुक्तिपति॥
गणनाथ-गणधर-गणपति गणईश-गणनायक प्रभो।
तुम ही विनायक विघ्ननाशक सर्व सुखदायक विभो॥7॥

गणधर प्रभु की अर्चना देती हमें सुख संपदा।
तव भक्ति कीर्त्तन से हमारी नाश होवे आपदा॥
ऋद्धिपति-सिद्धिप्रदाता सौख्यकारी मुनिवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो गुरुवरा॥8॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधर महामुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा : गणधर श्री भगवान, ऋद्धि सिद्धि दातार हैं।
करो इन्हीं का ध्यान, जब भी आवे आपदा॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री केवलज्ञान लक्ष्मी पूजा (दीपावली पूजा)

(गीता छंद)

तीर्थेश अर्हत् केवली अक्षय युगल लक्ष्मीपति।
कैवल्य ज्ञान महान लक्ष्मी और मुक्ति श्री पति॥
श्री समवशरण विशाल लक्ष्मी लोक त्रय में मान्य है।
ले हाथ में पुष्पांजलि उनका यहाँ आह्वान है॥

ॐ ह्रीं समवशरण श्री सहित केवलज्ञान महालक्ष्मी अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

पत्र पुष्प की माल सजे जल कुंभ ले।
ज्ञान लक्ष्मी के सन्मुख त्रयधारा करें।
मुनि-गणधर जिस दिव्यलक्ष्मी को पूजते।
सर्व सौख्य हित हम भी उसको पूजते॥1॥

ॐ ह्रीं समवशरण श्री सहित केवलज्ञान महालक्ष्म्यै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित शीतल चंदन से अर्चा करूँ।
अपने भव संतापों की चर्चा हरूँ॥ मुनि गणधर.....॥2॥

ॐ ह्रीं ..... संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥

मुक्ता अक्षत चढ़ा प्रफुल्लित आज मैं।
निश्चय पाऊँ अक्षयपद साम्राज्य मैं॥ मुनि गणधर.....॥3॥

ॐ ह्रीं .....अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

कमल मोगरा विविध पुष्प की माल ले।
जिनमुखवासी माता की अर्चा करें॥ मुनि गणधर.....॥4॥

ॐ ह्रीं .....कामबाणविनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

घेवर आदिक व्यंजन थाली में भरें।
क्षुधाजयी जगदम्बा को अर्पण करें॥ मुनि गणधर.....॥5॥

ॐ ह्रीं .....क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

घृत दीपक कर्पूर रत्न से आरती।
ज्ञान भारती मोह तिमिर परिहारती॥ मुनि गणधर.....॥6॥

ॐ ह्रीं .....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

अगर-तगर मय प्रासुक सुरभित धूप ले।
दिव्यध्वनि श्री लक्ष्मी माँ को पूज लें।।
मुनि-गणधर जिस दिव्यलक्ष्मी को पूजते।
सर्व सौख्य हित हम भी उसको पूजते।।7।।

ॐ ह्रीं .....अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

सरस मनोहर फल के गुच्छ चढ़ा रहा।
समवशरण श्री लक्ष्मीपति को ध्या रहा।। मुनि गणधर.....।।8।।

ॐ ह्रीं .....महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

वसु द्रव्यों की थाल-थाल की माल ले।
पद अनर्घ्य दात्री माँ की भक्ति करें।। मुनि गणधर.....।।9।।

ॐ ह्रीं .....अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा : **इहभव परभव शांति हित, करता शांतिधार।**
श्री लक्ष्मी जगमात को, चढ़ें फूल के हार।।

शांतये शांतिधारा.... दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ ऐं अर्हं समवशरण श्री युक्त केवलज्ञान महालक्ष्म्यै नमः।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा : **समवशरण श्री युक्त हैं, ज्ञानलक्ष्मी जगदम्ब।**
उनकी जयमाला पढ़ूँ, मिटे कर्म का दम्भ।।

(शंभु छंद)

सुरपति-नरपति-खगपति-मुनिपति, जिसका नित ध्यान लगाते हैं।
उस समवशरण श्री ज्ञान रमा को, हम भी नित उठ ध्याते हैं।।
जिनका शुभ पुण्य उदय आया, वे ही अर्हत पद पाते हैं।
उनमें सातिशय सुकृतधर, तीर्थंकर पद को पाते हैं।।1।।
प्रभु के पाँचों कल्याणक में, लक्ष्मी बहु रूप बनाती है।
वे जितना जग सुख त्याग करें, वो उतना उन्हें रिझाती है।।
माता के सोलह स्वप्नों में, गज लक्ष्मी देवी आती है।
तीर्थंकर जिन लक्ष्मीपति हैं, वह जग को आन बताती है।।2।।

गर्भागम से आगे-पीछे, वो रत्न वृष्टियाँ खूब करें।
प्रभु के जन्मोत्सव में आकर, कलशाभिषेक का रूप धरे।।
तब से दीक्षा के पहले तक, लक्ष्मी प्रभुवर की भक्ति करे।
दिव से भोजन आदिक आये, नव निधियाँ चौदह रत्न वरें।।3।।
फिर चक्ररत्न बनकर लक्ष्मी, षट्खंडों में यश फैलाये।
प्रभु की जिन दीक्षा होते ही, चौसठ ऋद्धि बनकर आये।।
मुनि के आहार होते तत्क्षण, वो पंचाश्चर्य बने बरसे।
तीर्थंकर महाश्रमण त्यागी, उनको लक्ष्मी पाने तरसे।।4।।
चउ घाति कर्म क्षय होते ही, कैवल्यज्ञान लक्ष्मी वरती।
श्री समवशरण लक्ष्मी बनकर, तीर्थंकर की अर्चा करती।।
प्रभु के विहार में सब दिश में, वो स्वर्ण कमल को रचती है।
अंतिम निर्वाण लक्ष्मी बनकर, वो सदा प्रभु संग रहती है।।5।।
सौधर्मादिक शत इन्द्र सदा, निर्वाण रमा को नित ध्यायें।
गणधर-मुनिवर-योगी-आगम, उस ज्ञान लक्ष्मी के गुण गायें।।
अकृत्रिम जिन चैत्यालय में, श्रुत वा श्रीदेवी होती हैं।
जिनभक्तों को लक्ष्मी सुख वा, विद्या का वर वे देती हैं।।6।।
जो उत्तम सुकृत करते हैं, लक्ष्मी उनके संग रहती है।
तुम निशदिन प्रतिपल पुण्य करो, सब जीवों से यह कहती है।।
श्री जिनमुखकमलवासिनी माँ, मैं मंगल कमल चढ़ाता हूँ।
चौसठ दीपक शिवलाडू ले, कैवल्यलक्ष्मी को ध्याता हूँ।।7।।
श्री वर्धमान तीर्थंकर वा, गौतम गणधर का ध्यान करूँ।
माँ सरस्वती शिव लक्ष्मी को, पूजूँ अपना उत्थान करूँ।।
इसविध जो लक्ष्मी को ध्याये, वो दुःख दारिद्र मिटाता है।
आगम सम्मत श्री लक्ष्मी को, 'गुप्तिनंदी' भी ध्याता है।।8।।

ॐ ह्रीं समवशरण श्री सहित केवलज्ञान महालक्ष्म्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : तीन लोक में श्रेष्ठ है, केवलज्ञान महान।
नमूँ-नमूँ उसको सदा, पाऊँ पद निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सरस्वती पूजन

(गीता छन्द)

हे भारती हंसासनी, वागीश्वरि माँ शारदा।
सुंदर अनेकों नाम से, जग पूज्य श्रुतदेवी सदा॥
अरिहंत मुख वासिनी हमें, अरिहंत रूप दिलाइये।
इस पुत्र के मन हंस पर, हंसासनी बस जाइये॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनी अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनी अत्र तित्र-तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनी अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

नरसिंह की माता के लिए झारी सिंहमुखी।
झारी से जल चढ़ा के हम रहे सदा सुखी॥
पावन घड़ी सरस्वती विधान की बड़ी।
माँ शारदे घुमादे हम पे जादू की छड़ी॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

चंदन के बहाने जो चरण मात के छुए।
हम भक्त ओत-प्रोत मातृभक्ति से हुए॥ पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री ..... संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

मोरासनी के सिर पे दिव्य मोर मुकुट है।
अक्षत स्वरूप हम चढ़ायें रत्न मुकुट ये॥ पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री ..... अक्षय पद प्राप्तये अक्षातान् निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

चंपा की बिछुड़ी व चमेली की पैजनी।
पहना के तुझे भावना सद्भावना बनी।।
पावन घड़ी सरस्वती विधान की बड़ी।
माँ शारदे घुमादे हम पे जादू की छड़ी।।

ॐ ह्रीं श्री ..... कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

माँ हमको खिला द्वादशांग की मिठाईयाँ।
हम आपको चढ़ा रहे द्वादश मिठाईयाँ।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री ..... क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

हम रत्न से सरस्वती की मूर्ति बनायें।
फिर रत्न दीप से महान आरती गायें।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री ..... मोहांधकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

मंडल विधान का बना बिठायें आपको।
घट धूप के सजा चढ़ायें धूप आपको।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री ..... अष्टकर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

शिवफल प्रदायिनी को फल अनेक चढ़ायें।
सुन-सुन के उससे लोरी मोह नींद भगायें।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री ..... महामोक्षफल प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

हे वाग्वादिनी तू हमें वाक्यसिद्धी दे।
हम अर्घ चढ़ायें तू हमें आत्मसिद्धी दे।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री ..... अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।9 ।।

सुंदर सुवर्ण रत्नमयी वस्त्र आभरण।
पहना के तुझे हमको मिले श्रेष्ठ आचरण।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री ..... वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

(दोहा)

हेम रत्न के कलश ले करते शांतिधार।
ज्ञान सलिल उर में बहे धोये आत्म विकार॥
शांतये शांतिधारा.....।

जल भूमिज बहु रत्न के सुरभित दीप्त सरोज।
अर्पित हर्षित भाव से पायें चिन्मय योग॥
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हन्मुख कमलवासिनी पापात्म क्षयंकरी वद-वद वाग्वादिनी ऐं ह्रीं नमः स्वाहा। या

ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः॥ (इस मंत्र का 9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- जिनमुख भाषित शारदा गणधर धारे शीश।
उनकी जयमाला पढूँ पाऊँ प्रज्ञाशीश॥

(शम्भ छंद)

जय-जय जिनवाणी सरस्वती हे ज्ञान गंग श्रुत महोदधी।
जयमाल तुम्हारी गाता हूँ तुम श्रुत देवी मैं लघु बुद्धी॥
जिनमुख से तुम अवतीर्ण हुई औ समोशरण है महल महा।
द्वादश अंगों से कल्पित है त्रैकालिक सुन्दर रूप अहा॥1॥

सम्यग्दर्शन का तिलक श्रेष्ठ शुचि संयम की सुन्दर साड़ी।
रत्नत्रय के रंगीन वस्त्र, जिनको पूजे यह त्रस नाड़ी॥
द्वादश अंगों से अंग सजे चौदह पूर्वों के आभूषण।
माँ स्याद्वाद का शस्त्र लिये हरती जग के मिथ्यादूषण॥2॥

तुम मुकुट चन्द्र से शोभित है जिस पर जिनदेव विराजित हैं।
सुन्दर मयूर पर कमलासन जिस पर श्रुतदेवी राजित है॥
अनुयोग चार चऊ पाणि है इक कर में श्री जिनवाणी है।
दूजे में अक्ष जाप माला तीजे कर वीणा पाणि है॥3॥

चौथे कर श्रेष्ठ कमंडल है जिसमें गर्भित भूमंडल है।
प्रज्ञा व अभय प्रदान करे हर्षित तेरा मुख मंडल है॥
तुम पाश हरे भव पाश सदा अंकुश कर्मों पर अंकुश है।
सब नाम तुम्हारे सार्थक हैं जिसको ध्याकर हर मन खुश है॥4॥

भारत माता श्रुत भारती तुम, माँ सरस्वती दो सरसमती।
माँ आप शारदा ब्रह्माणी, शुभ हंसगामिनी अभयवती॥
तुम नाम विदूषा वरदा है, गौ गिर वाणी कल्याणी है।
सुकुमारी वागीश्वरी तथा, माँ ब्रह्मचारिणी ज्ञानी है॥5॥

चारित्र कलाधर कलानिधी जगदम्ब ब्राह्मिणी श्रुतदेवी।
लघुभाषा और महाभाषा प्रगटी तुमसे जिनमुख सेवी॥
सब युवती से अति सुन्दर तुम, जगमाता श्री जिनवाणी हो।
तुम धर्म सृष्टि का मूल स्रोत तुम अक्षय ज्ञान प्रदानी हो॥6॥

माँ हंस तिहारा प्रज्ञा का शुचि भेद ज्ञान दर्शाता है।
रंगीन पंख से सजा मोर सुन्दर वाहन कहलाता है॥
श्री कल्पवृक्ष है अनेकांत जिसमें सब अंत समाते हैं।
तेरे रत्नत्रय सरवर में गोता मुनि हंस लगाते हैं॥7॥

हे आर्या ! जो तुमको ध्याये, श्रुत कल्प वृक्ष में रम जाये।
वो जड़धी शास्त्र विशारद हो, केवलि श्रुत केवलि पद पाये॥

इक हरिण श्रमण के आश्रम में, सुनता था प्रतिदिन जिनवाणी।
वो बालि मुनि लंकेश जयी, श्रुत सिद्ध बने केवलज्ञानी॥8॥

मरूभूति प्रज्ञा कुल मद में, नाना गतियों में भरमाये।
जब जिनश्रुत गुरु पे श्रद्धा की, सुकुमाल बने दिव सुख पाये॥
धरसेन गुरु से शिक्षित थे, श्री पुष्पदंत वा भूतबली।
जब चली लेखनी दोनों की, कलियुग में श्रुत गंगा निकली॥9॥

कौण्डश नाम गोपालक ने जिन मुनि को शास्त्र प्रदान किया।
वो कुन्दकुन्द आचार्य बने, बहु ग्रंथ रचे कल्याण किया॥
जिनश्रुत रक्षा में न्यौछावर, निकलंक वीर बलिदानी है।
अग्रज अकलंक महातार्किक, तुम पर अर्पित श्रद्धानी है॥10॥

गुरुवर समन्त भद्रेश्वर ने जब पाठ रचा अति मनहारी।
तब विग्रह फोड़ा प्रगट हुए श्री चन्द्र प्रभो अतिशयकारी॥
श्री पूज्यपाद वा नेमिचन्द्र गुरु वीरसेन, जिनसेन हुए।
मुनि मानतुंग, श्री कुमुदचन्द्र, श्रुत लेखक गुरु रविषेण हुए॥11॥

इत्यादिक जैनाचार्य कई, श्रुत रचना में तल्लीन हुए।
जैनागम के अति गूढ़ सूत्र, ले ताड़पत्र उत्कीर्ण किये॥
भूपाल कुंवर ने श्रद्धा से, तुम नाम मंत्र का जाप किया।
बन महाकवि क्षणभर में ही, चउविंशति स्तव पाठ किया॥12॥

दक्षिण के शांति सागर ने तालों से तुम्हें निकाला है।
जिनश्रुत प्रगटा फिर भारत में फैलाया नव उजियाला है॥
गुरु आदि शिष्य महावीर गुरु, फिर श्रुत की महिमा फैलाये।
मुनि आर्या को बहु ग्रंथ पढ़ा, बहु शास्त्र रचे वा रचवाये॥13॥

माँ विजयमती श्री ज्ञानमती, आदी विशुद्ध सूपार्श्वमती।
गुरु से शिक्षित सब आर्याऐं इस युग की मानो सरस्वती॥
जिनवाणी माँ के लालों में, श्री कुन्थु कनकनंदी गुरुवर ।
श्री गणधर वलय विधान लिखा, वो मात राजश्री अति सुन्दर॥14॥

जो सम्यक् श्रद्धा धर उर में, सम्यक् ग्रंथों का सृजन करें।
वो आगे अर्हत् पद पाये, शिव लक्ष्मी उसका वरण करे॥
जो ज्ञान ध्यान श्रुत रचना में, अपना शुभ द्रव्य लगाते हैं।
वो नवनिधी चौदह रत्न वरें चक्री जिनवर बन जाते हैं॥15॥

हे मात ! तुम्हारा नाम मंत्र श्रद्धा से जो भी जाप करे।
वो महाकवि विद्वान बने, संयम धर सारे पाप हरे॥
हे मैया ! लाल तिहारा मैं माँ मुझको प्रज्ञा से भर दो।
मुझ 'गुप्तिनंदी' को मोक्ष मिले ऐसा पावन अक्षय वर दो॥16॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादनिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य विद्या लाभ की करते सुमंगल भावना।
जगदम्ब पे आस्था धरे करते महा आराधना।
वो चन्द्र सम उज्ज्वल सुयश अक्षुण्ण पा इस लोक में।
त्रय गुप्तिधर शिवराज वर शाश्वत रहे शिवलोक में॥

इत्याशीर्वादः दिव्यपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नोट-इन पूजाओं के करने से पूरे वर्ष व्यापार में लाभ होता है परन्तु आतिशबाजी करने से लक्ष्मी अप्रसन्न होकर चली जाती है। धन हानि से बचने के लिए पटाखे आदि आतिशबाजी नहीं करें।

अर्घावली

देव-शास्त्र-गुरु का अर्घ

(शंभु छंद)

अक्षय अनर्घ्यपद अविनाशी पाने वाले जिन जगभासी।
अविचल पद धात्री हे माता ! जिनवाणी हे जिनमुखवासी॥
हे तीर्थंकर ! के लघुनंदन, तुम हो अनर्घपद अधिकारी।
मैं अष्ट द्रव्य का अर्घ चढ़ा पाऊँ, अनर्घपद अविकारी॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस भगवान का अर्घ

(अडिल्ल छंद)

जल फल आदि अर्घ बनाऊँ भाव से।
पद अनर्घ हित भक्ति रचाऊँ चाव से॥
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी माता का अर्घ

जल-फलादि दिव्य वस्त्र अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया॥
दिव्य देशना महान हे जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवचना विभाव की॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोदंभव सरस्वती वाग्वादिनीभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन कम नौ करोड़ मुनियों का अर्घ

(शंभु छंद)

जल चंदन अक्षत दीप धूप नैवेद्य हरित फल लाया हूँ।
अंतर में भक्ति भाव लिये ऋषिराज शरण में आया हूँ॥
नवकोटि न्यून त्रय मुनियों को मैं वंदन बारम्बार करूँ।
बन जाऊँ मुनि मन सम निर्मल यह शुद्ध भावना हृदय धरूँ॥

ॐ ह्रीं श्री न्यून त्रय नवकोटि श्रमणेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी का अर्घ

(शंभु छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु हे वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर॥
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्॥

ॐ ह्रीं श्री गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव का अर्घ

(तर्ज–मेरे सिर पर रखदो बाबा...)

हे प्रज्ञायोगी गुरुवर दो प्रज्ञा का वरदान।–2
गुरुवर गुप्तिनन्दी को बारम्बार प्रणाम॥–2
अष्ट द्रव्य से सजी धजी ये सुन्दर थाल निराली हैं।
गुरु तुमको अर्घ चढ़ाकर मिल जाती खुशहाली हैं॥
हे कुंथुगुरु के नंदन हे धर्म तीर्थ की शान।
गुरुवर गुप्तिनंदी को बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनन्दी गुरुदेव चरणेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(तर्ज– नसे घातियाँ...)

परमेष्ठियों को सदा मैं ध्याऊँ, माँ शारदे को शीश नवाऊँ।
अनेकांत मय ये धर्म है प्यारा, सब पापों से हो छुटकारा॥1॥

पंचसुमेरु के अस्सी जिनालय, भव्यों के सुख के हैं आलय।
बावन जिन चैत्यालय प्यारे, नंदीश्वर हैं सब मनहारे॥2॥

तीनलोक के कृत्रिमाकृत्रिम, चैत्यालय में हैं जिनबिम्ब।
उनको नित प्रति अर्घ चढ़ाऊँ, भाव वंदना से सुख पाऊँ॥3॥

सम्मेदगढ़ गिरनार गिरी को, चम्पापुरी और पावापुरी को।
सोनागिर मथुरा चौरासी, बाहुबली गोम्मटगिरी वासी॥4॥

आदि सभी तीरथ को ध्याऊँ, उनको नितप्रति अर्घ चढ़ाऊँ।
सीमंधर आदि जिन स्वामी, पूजा करूँ मैं हे जगनामी॥5॥

दोहा– अष्टद्रव्य का थाल ले, अर्घ चढ़ाऊँ आज।
इहभव–परभव सफल हो, सिद्ध होय सब काज॥

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर–नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम–अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर,

कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, अंजनगिरी, नवग्रह तीर्थ वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, श्री धर्मतीर्थ, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव, रानीला, रोहतक आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे..... मासानांमासे.....मासे..... पक्षे..... तिथौ..... वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पांजलि क्षेपण करते रहें)

शांतिनाथ हैं जगहितकारी, शान्ति प्रदाता मंगलकारी।
सौम्य शांत प्रतिमा जो लखता, भवसागर से वह नर तिरता।।1।।
शरण तुम्हारी जो भी आता, मंगलमय शिवपद पा जाता।
पूजा प्रतिदिन भाव से करता, वह नर कभी न दुःख में पड़ता।।2।।

(यह श्लोक बोलते समय शांतिधारा करें)

शांतिधारा तुम्हें चढ़ाऊँ, प्रभु सम शांति मैं पा जाऊँ।
जग जीवों को शांति कर दो, धर्म सुधारस सब में भर दो।।3।।
दुःखी दरिद्री रहे न कोई, सबकी मति धर्ममय होई।
देव गुरु की शरणा पायें, भव दुःखों से न घबरायें।।4।।

राजा-प्रजा सभी नर-नारी, भक्ति करते सभी तुम्हारी।
भक्त से वे भगवान हैं बनते, मुक्ति रमा पा सुख में रमते॥5॥

विसर्जन पाठ

(दोहा)

प्रमादवश मैंने प्रभो! की पूजा में चूक।
अज्ञानी हूँ नाथ मैं क्षमा करो शिव भूप॥1॥

भक्ति भाव में मन लगा पाऊँ तुम सम रूप।
चरण शरण पा आपकी काटूँ कर्म अनूप॥2॥

तीन काल त्रैलोक्य में कोई न सच्चा देव।
जगत भ्रमण अब तक किया पूजें देव-कुदेव॥3॥

सत्य लगन हुई आपसे मिट गई मन की प्यास।
सम्यग्दर्शन निधि मिले छूटे भव की त्रास॥4॥

श्री जिन पूजन यज्ञ में आये जो-जो देव।
धर्मप्रेम रख जिन भवन, आयें नित्य सदैव॥5॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा- भगवंतों की आशिका, धारण करता शीश।
भव बंधन मेरे कटें, शरण पाऊँ जगदीश॥

●●●

दीपावली व व्यापार वृद्धि के कुछ मंत्र–यंत्र–तंत्र

(1) रोजगार के लिये– ॐ ह्रीं अर्थ वर्ग सिद्धि साधन करण समर्थाय श्री शान्तिनाथाय नमः।

विधि– त्रिकाल जाप करें अवश्य सफलता मिलती है।

(2) नौकरी प्राप्ति मंत्र– ॐ नमः भगवती पद्मावती ऋद्धि–सिद्धिदायिनी दुःख दारिद्रय हारिणी श्रीं श्रीं नमः कामाक्षाय ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि– शनिवार के दिन मुनिसुव्रतनाथ भगवान की पूजा करने के बाद उपरोक्त मंत्र की 10 माला जाप करें तो मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर जब नौकरी ढूँढ़ने जाये तो 11 बार मंत्र का जाप करें और किसी सन्त महात्मा को दान दें अथवा किसी दुःखी व्यक्ति की यथा शक्ति सहायता करें तो निश्चित ही नौकरी प्राप्त होती है।

(3) पदोन्नति मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घण्टाकर्णे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि– प्रतिदिन 108 बार पढ़ें।

(4) अंग व आत्मरक्षक मंत्र– ॐ ह्रीं णमो अरिहन्ताणं पादौ रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं कटिं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं नाभिं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं हृदयं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ब्रह्माण्डं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं एसो पंच णमोयारो शिखां रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं सव्वपावप्पणासणो आसनं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं आत्मरक्षां पररक्षां हिलि हिलि मातङ्गिनि स्वाहा।

विधि– उक्त मंत्र का प्रातः प्रतिदिन शुद्ध होकर एक बार जाप करने से अंगरक्षा व आत्मरक्षा होती है।

(5) रक्षा मंत्र– (अ) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः श्रीं ह्रीं कलिकुंड दंड स्वामिन् सर्वरक्षाधिपतये मम रक्षां कुरु–कुरु स्वाहा।

(ब) ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुंड दंड पार्श्वनाथाय–धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय घातिकर्म क्षयंकराय, अतुलबल वीर्य पराक्रमाय सर्वचिंता विघ्नबाधा स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्रः ह्रूँ फट् स्वाहा।

(स) ॐ क्षां क्षीं क्षूँ क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः नमोऽर्हते सर्वं रक्ष–रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।

(द) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सर्व विघ्न विनाशक ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रः ठः ठः स्वाहा।

विधि– इन मंत्रों में से किसी भी मंत्र की प्रतिदिन 108 बार जाप करना चाहिए।

(5) ऐश्वर्य प्राप्ति व सन्तान सुख मंत्र– ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं लक्ष्मी कलिकुण्ड स्वामिने मम आरोग्यं ऐश्वर्य कुरु कुरु स्वाहा।

विधि–शुक्रवार को मंत्र जाप शुरू करें फिर प्रतिदिन एक माला करें अर्थात् 108 बार पढ़ें।

(6) नवरात्रि, सर्वकार्य सिद्धि मंत्र–''ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ह्रः ऐं नमः स्वाहा।''

विधि– नवरात्रि में ब्रह्मचर्य व्रत पूर्वक, दिन में एक बार भोजन कर, पवित्र मन से एकान्त में अखण्ड दीप, धूप पूर्वक साढ़े बारह हजार जप करने से मंत्र सिद्ध होता है। फिर नित्य एक माला अवश्य जपें, इससे आनंद से दिन निकलता है। 21 बार जपकर व्याख्यान दें तो श्रोता मोहित होय। 21 बार जपकर वाद–विवाद करें तो जय होय। कोर्ट में मजिस्ट्रेट के सामने 21 बार जपकर बोलें तो मुकदमें में विजय होय। जलाशय के किनारे बैठकर एक माला जपकर गाँव में जायें तो व्यापार लाभ होय, सर्वकार्य सिद्ध हों। शत्रु पराजय होय, 21 बार जपने से सिरदर्द दूर होय। 21 बार मंत्रित कर पानी पिलाने से पेट दर्द दूर होय। बिच्छू का जहर उतरे। मार्ग में चलते समय जपें तो सर्वभय नष्ट होय।

(7) नवरात्रि सर्व मनोरथ पूर्ण मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं नमः।

विधि– यह सर्व कार्य सिद्धि मंत्र हैं, इसे नवरात्रि में साढ़े बारह हजार जाप करके सिद्ध करें व प्रयोग के समय मात्र '21' बार स्मरण करें, सब कार्य की सिद्धि होगी।

(8) दीपावली मनोवांछित कार्य मंत्र– (1) ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अट्ठे मट्ठे क्षुद्र विघट्ठे क्षुद्रान् स्थम्भय स्थम्भय दुष्टान् चूरय चूरय मनोवांछितं पूरय–पूरय स्वाहा।

विधि– दीपावली के दिन 1000 जप करें, पीछे एक माला नित्य फेरें तो मनोवांछित कार्य हों।

(9) लक्ष्मी प्राप्ति का अद्‌भुत मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं ब्लूं ठें ॐ घंटाकर्ण महावीरं लक्ष्मी पूरय पूरय सुख सौभाग्यं कुरु–कुरु स्वाहा।

विधि– दीपावली की धनतेरस को इस मंत्र की 40 माला, चतुर्दशी को 42 माला और अमावस्या को 43 माला लाल वस्त्र पहन कर लाल आसन पर बैठकर, पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके इस मंत्र की जाप करें। जाप के स्थान में मंगल कलश विराजमान करें एवं तीर्थंकर की फोटो के सामने दीपक जलायें और धूप खेते जायें। तीनों दिन पूर्ण संयम रखें तो इस मंत्र के प्रभाव से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

(10) दीपावली कर्ज मुक्ति मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं ॐ घंटाकर्ण महावीरं लक्ष्मी पूरय पूरय सुख सौभाग्य कुरु–कुरु स्वाहा।

विधि– दीपावली को सफदे वस्त्र, सफेद आसन, सफेद माला का उपयोग करें व व्यापार वृद्धि मंगल कलश की स्थापना करें। दीपक जलाएं उत्तर दिशा को मुँह करके जप करें तो वह वर्ष निश्चित ही **कर्ज मुक्ति** हो।

विधि– इसी मंत्र की धनतेरस को 40 माला, रूप चौदस को 42 माला तथा दीपावली को 43 माला का जाप रें तो वह वर्ष निश्चित ही लक्ष्मी प्राप्ति हो।

(11) मृत्युञ्जय मंत्र– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः णमो जिणाणं जीवन लाभं कुरु–कुरु स्वाहा।

विधि– प्रतिदिन प्रातःकाल 108 बार जपें।

(12) क्रय–विक्रय में लाभ का मंत्र– ॐ नमो भगवउ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण महाणसस्स अवतर–अवतर स्वाहा।

विधि– इस मंत्र से 500 बार अक्षत (चावल) को मंत्रित करके बिकने वाली चीजों पर डालने से विक्रय शक्ति बढ़ती है और क्रय–विक्रय में लाभ होता है।

(13) माल क्रय में लाभ होवे– ॐ ह्रीं श्रीं धन धान्य करि महाविद्ये अवतर–अवतर मम गृहे धन–धान्यं कुरु–कुरु स्वाहा।

विधि– 500 बार अक्षताभिमंत्र्य क्रयाण के क्षिप्यंते क्रयो लाभश्य भवति।

(14) लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र– ॐ ह्रीं ह्रूँ णमो अरहंताणं नमः।

विधि– प्रतिदिन 108 बार पढ़ें। निरन्तर 108 बार विधि पूर्वक जपने से लक्ष्मी प्राप्ति सर्वकार्य सिद्धि होय। 21 बार या 108 बार जपके जिस वस्तु पर हाथ रखें वह अक्षय होय।

(15) अटूट लक्ष्मी होय मंत्र– ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

विधि– तीन दिन में 1200 जाप करें उपवास के साथ, आसन, माला, वस्त्र, पीले रंग के लेना। जाप करते समय अखण्ड धूप–दीप रखना। जाप पूर्ण होने के बाद एक माला प्रतिदिन करना चाहिए।

फल– अटूट लक्ष्मी प्राप्ति, धन–धान्य प्राप्ति, शरीर सुख एवं चारों ओर प्रताप बढ़े।

(16) धन–संपत्ति रक्षा मंत्र– ॐ ह्रां ह्रौं श्रूं ह्रः कलिकुंड स्वामिने जये विजये अप्रतिचक्रे अर्थ सिद्धिं कुरु–कुरु स्वाहा।

विधि– यह मंत्र ताम्र पत्र पर लिखकर द्रव्य (पैसे के भण्डार) में रखें तो धन बढ़े और बिक्री होय।

(17) वस्तु विक्रय मंत्र–

णट्ठट्ठ भयट्ठाणे पणट्ठ कम्मट्ठ णट्ठ संसारे।
परमट्ठ णिट्ठियट्ठे अट्ठे गुणाधीसरंवंदे ।।

विधि– इस मंत्र का पीली सरसों अथवा छोटे–छोटे सात पत्थरों पर 108 बार जाप करके कोई भी वस्तु सामान में मिला दें तो वस्तुओं की बिक्री

अच्छी होती है। विशेष दुर्बुद्धि का नाश होय, राज से भय टले, अष्ट सिद्धि व नव निधि की प्राप्ति होय, प्रताप बढ़े, रोगादि नष्ट होय, सुख प्राप्त होय, 108 सफेद पुष्पों को प्रतिदिन जप कर दस हजार जाप करें।

(18) व्यापार में लाभ मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै अर्हं नमः।

विधि–इस मंत्र को दिन में तीन बार जपें तो व्यापार में लाभ होय, सर्वत्र जय हो।

(19) संकट निवारक शान्ति दायक मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं अ सि आ उ सा नमः सर्व शांति कुरु–कुरु स्वाहा।

विधि– शुभ दिन से प्रारम्भ कर प्रतिदिन 1 माला जाप करें तो संकट दूर होकर शान्ति मिलती है।

●●●

यंत्राधिकार

(1) सर्व कार्य सिद्धि यंत्र–

विधि– इस यंत्र को रवि–पुष्य, गुरु–पुष्य या दीपावली में भोजपत्र या सोना–चाँदी के पत्र पर लिखकर पूजें, सर्व कार्य सिद्धि होय।

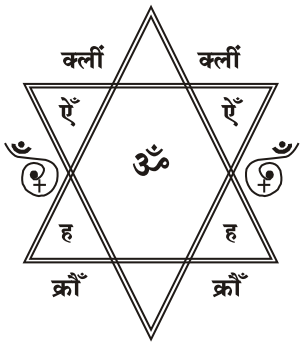

(2) सर्व कार्य सिद्धि यंत्र–

विधि– इस यंत्र को रवि–पुष्य, गुरु–पुष्या या दीपावली में भोजपत्र या सोना–चाँदी के पत्र पर लिखकर पूजें, सर्व कार्य सिद्धि होय।

(3) व्यापार बहुत चले यंत्र–

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

विधि– इस यंत्र को दीपावली के दिन अर्द्धरात्रि के समय सिन्दूर से दुकान के बाहर लिखें एवं यंत्र की प्रतिष्ठा कर दें तो दुकान अधिक चले। अथवा अमावस्या के दिन अर्द्धरात्रि के समय लिखें और जिसको बनाया हो उसे प्रातःकाल देवें।

(4) व्यापार उन्नतिकारी यंत्र–

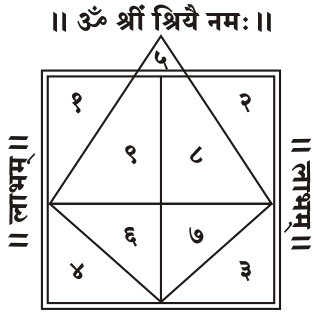

विधि– इस यंत्र को दीपावली के दिन दीवार पर अथवा भोजपत्र पर लिखकर दुकान, फैक्ट्री आदि में रखना चाहिए और इष्ट देव के साथ पूजा करना चाहिए। व्यापार आदि को बढ़ाने व उन्नति लाने का परमोपयोगी परीक्षित सिद्ध यंत्र है।

(5) व्यापार वृद्धि लाभकारी यंत्र–

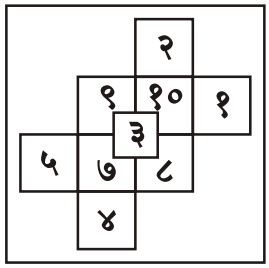

विधि– इस यंत्र को दुकान पर पूजा के स्थान पर अष्टगंध से दीवाली पर बनाएं। अथवा बनाकर पास में रखें तो व्यापार या क्रय–विक्रय कार्य में लाभ होय।

(6) विक्रय वृद्धि यंत्र–

७३	८९	२	२
७६	३	७७	६६
७९	७४	८	१
४	७५	५	७

विधि– इस यंत्र को दीपावली के दिन दुकान के सामने रखें तो बिक्री अधिक होती है।

(7) व्यवसायवर्धक यंत्र–

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६

विधि– इस यंत्र को दीपावली के दिन शुभ दिन, शुभ समय में लिखकर दीप–धूप, पुष्प से पूजा करते रहना। तिजोरी में रखें या जहाँ पर धन–सम्पत्ति रखते हैं वहाँ पर रखें।

(8) व्यापार लाभ यंत्र–

१२	११	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

विधि– इस यंत्र को दीपावली के दिन मध्य रात्रि में अष्टगंध से बनावें अथवा जिसके लिये बनाया हो उसका नाम लिखकर पास में रखने से जय होती है। व्यवसाय करते समय गद्दी के नीचे रखने से लाभ होता है।

(9) व्यापार वृद्धि यंत्र–

४२०००	४९०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४८०००	४३०००	८०००	१०००
४०००	५०००	४४०००	४७०००

विधि– दीपावली की रात्रि में इस यंत्र को अष्ट गंध से लिखकर, प्रतिष्ठा कराके गद्दी के नीचे दबाकर बैठने से व्यवसाय में लाभ होता है। यंत्र को लोभान की धूप दें तो सिद्ध हो जायगा।

(10) व्यापारी वर्ग में प्रभाव प्रशंसा वर्धक यंत्र–

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

विधि– इस यंत्र को दीपावली के दिन दरवाजे पर मकान की दीवार पर लिखना चाहिए अथवा भोजपत्र पर लिख कर पास में रखने से व्यापारी वर्ग में इज्जत बढ़ेगी। हर एक कार्य में लोग सलाह पूछने आयेंगे। सभी प्रशंसा करेंगे। व्यापारियों में प्रभाव बढ़ेगा।

तंत्राधिकार

(1) व्यापार घाटे चल रहा हो तो– यदि भरपूर मेहनत के बाद भी व्यापार में बरकत न हो, ग्राहक आना कम हो, माल न बिके, लगातार व्यापार न चल रहा हो तो रविवार को एक मुट्ठी काले उड़द लेकर श्री णमोकार मंत्र का जाप करते हुए व्यापार स्थल पर 7 बार उतार कर दुकान में बिखेर दें। अगले दिन मोरपंख की झाड़ू से एकत्र करके चौराहे पर डालें ऐसा 7 रविवार करें व्यापार में उन्नति होगी।

(2) ऋण से मुक्ति– रात को सोते समय पलंग के नीचे सिरहाने की तरफ जौ रखकर सुबह उठकर पक्षियों या गरीबों को दें, इससे ऋण मुक्ति होगी।

(3) धन हानि– काले तिल परिवार के सभी सदस्यों के सिर पर से सात बार उतार कर घर से उत्तर दिशा में फेंक दें, धन हानि बंद होगी।

(4) लक्ष्मी प्राप्ति– प्रतिदिन प्रातः व सायंकाल को घर या दुकान में कपूर जलाने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वातावरण का वायुदोष शांत होता है, अतः प्रतिदिन व्यापार वृद्धि यंत्र या गणधर वलय, मंगल कलश के सामने कपूर की आरती अवश्य करें।

(5) व्यापार स्थल की हाय (नजर) उतारने का टोटका– रविवार के दिन– फिटकरी 31 बार उतार कर दुकान से बाहर किसी चौराहे पर जाकर उत्तर दिशा में फेंक दें।

(6) दुकान की नजर बाधा– प्रातःकाल या सायंकाल पीला नींबू तिजोरी पर 7 बार घुमाकर उसे आढ़ा रखकर काटें व एक टुकड़ा दाईं व एक टुकड़ा बाईं ओर फेंक दें।

(7) अपने घर, दुकान या ऑफिस में दक्षिण या पश्चिम की दीवाल पर श्री गणधर वलय यंत्र व जैन श्रीयंत्र लगाकर नित्य सुबह–शाम दीप–धूप से आरती करें व मंत्र जाप करने से व्यापार में निरन्तर लाभ होता है, कर्ज मुक्ति होती है व आत्म विश्वास बढ़ता है।

●●●